Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2

Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

नासिरा शर्मा का उपन्यास -"कुइयाँजान" में जल संकट का प्रतिबिंब

डॉ. वसीम मक्रानी, सहायक प्राध्यापक, नं. ता. वि. स. का, जी. टी. पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय नंदुरबार

प्रस्तावना

नासिरा शर्मा का "कुइयाँजान" यह उपन्यास सन् 2005 में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ।'' प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने इसे 2005 साल का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कहा है।'' [1] नासिरा शर्मा की लेखन शैली सरल और प्रभावशाली है। उन्होंने कठिन विषयों को मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठकों को कहानी में गहरी रुचि बनी रहती है। उपन्यास का प्रवाह बहुत सटीक और गहरी सोच को जन्म देता है, जो हर पाठक को सोचने पर मजबूर करता है। उनकी शैली में संवेदनशीलता और सामाजिक मुद्दों के प्रति गहरी समझ है, जो पाठक को संवेदनशील बनाती है। उपन्यास में पात्रों का विकास भी बहुत अच्छा है। हर पात्र का जल संकट से प्रभावित होना, उसकी सोच, और उसका संघर्ष पाठक के दिल को छू जाता है।

इस उपन्यास में आज के समय में चल रही पानी की समस्या को उजागर किया है। एक महत्वपूर्ण और सामयिक विषय को उठाता है वह है पानी और उसकी समस्या। यह उपन्यास न केवल जल संकट की गंभीरता को उजागर करता है, बल्कि वह पारंपरिक जलस्रोतों, उनके महत्व, और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर भी गहरी चिंता व्यक्त करता है।

"कुइयाँजान" का अर्थ है "कुएं का पानी" और इसके माध्यम से लेखक ने जलस्रोतों की महत्ता और उनकी भूमिका को जीवन के बुनियादी तत्व के रूप में प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि इलाहाबाद शहर है। इलाहाबाद की मस्जिद वाली गली में बिजली चली जाने के कारण लोगों को पानी उपलब्ध नहीं होता जिस कारण वहाँ हाहाकार मच जाता है। लेखिका लिखती है,- 'मृत्यु दर दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। भारत में गांव, कस्बों, शहरों में लोग कुंओं,तालाबों और नदियों से पानी लेते हैं, जो अधिकतर गंदा और कीटाणुयुक्त होता है। उसमें प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले संखिया की मिलावट होती है। पानी की कमी के कारण देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तनाव पनपते हैं'' [2] इस से जल समस्या की वैश्विक विकरालता से साक्षात्कार होता है।

1. कथानक और जल का महत्व

"कुइयाँजान" एक उपन्यास है, न कि कोई तकनीकी या वैज्ञानिक पुस्तक। लेकिन इसमें जल संकट से जुड़ी गहरी विचारधारा और सामाजिक समस्याएं समाहित हैं। उपन्यास के केंद्र में जल संकट, उसकी कमी, और पारंपरिक जलस्रोतों के संरक्षण की आवश्यकता है। भारत में जल संकट एक गंभीर मुद्दा बन चुका है, और इसके प्रभाव हर क्षेत्र में महसूस किए जाते हैं। नदियों का सूखना, कुओं का खत्म होना, और बोरवेल्स का तेजी से घटता जलस्तर यह सब जल संकट के कारण हो रहे संकटों के उदाहरण हैं। उपन्यास में नासिरा शर्मा इस संकट के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को दिखाती हैं। "कुइयाँजान" न केवल जल संकट के बारे में बात करता है, बल्कि यह उस पारंपरिक ज्ञान और जलस्रोतों की महत्ता पर भी जोर देता है, जो हमारे पूर्वजों ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए विकसित किया था। 'कुइयांजान' उपन्यास पाठक को सोचने पर मजबूर

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

ही नहीं करता, बल्कि मांग भी करता है कि पढ़ने वाला उसके बहाव उसकी लय में खो जाए। "कुइयांजान ऐसे सुलगते हुए मसले पर ऐसी मुस्तहकम सोच और ऐसी रवानी के साथ लिखा गया है कि सफ़हा कोई भी हो, सतर कोई हो और बात कैसी भी हो, मगर घूम फिर कर एक मरकज पर ठहर जाती है।" [3] पहले के जमाने में राजा-महाराजा, जमींदार व धनवान लोग गांव-गांव में आहर बंधवाते और पोखर व कुएं खुदवाते थे. यह बहुत पुण्य का काम समझा जाता था. तब सिंचाई व पेय जल के स्रोतों के मामले में हर गांव आत्मनिर्भर रहता था. आहर, पइन, पोखर आदि जैसी पुरानी सिंचाई प्रणालियां भूगर्भीय जल को रिचार्ज भी करती थीं, जबकि आधुनिक बोरवेल से सिर्फ दोहन होता है. आधुनिक सिंचाई प्रणालियों के मोह में जल संबंधी पारंपरिक ज्ञान को नजरअंदाज करने से हमारा संकट और बढ़ा ही है।

2. समाज में जल संकट का असर

नासिरा शर्मा ने उपन्यास के माध्यम से जल संकट के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों पर इसका प्रभाव, ग्रामीण जीवन की मुश्किलें, और जल के बिना जीवन की कठिनाइयों का चित्रण किया गया है। सदियों से मानव विकास की शतत् प्रक्रिया से गुज़रते हुए हम वर्तमान आधुनिक युग में आ गये। हमने भौतिक सुख- सुविधाओं में अंबार खड़े कर दिये। हमारे विज्ञान ने चालक रहित विमान से लेकर मानव क्लोन तक ईजाद कर दिया। हम चाँद पर जा पहुंचे, जैविक और रासायनिक हथियार हमारी वैज्ञानिक उपलब्धि बने किन्तु जीवन का वह आवश्यक मूल तत्त्व जिसके बिना जीवन की संकल्पना करना ही बेमानी लगने लगता है, 'स्वच्छ जल' इसके लिए इन तमाम वैज्ञानिक या मानवीय उपलब्धियों में कहीं कोई स्थान नज़र नहीं आता। जब कि जल स्वयं मानव इतिहास की वह पहली उपलब्धि है जिसे पीकर उसने अपनी प्राण रक्षा की। वह प्यास वह तृष्णा जिस की तीव्रता मानव जीवन में आज भी कम नहीं है और न ही हो सकेगी। निश्चित ही इन्हीं चिन्ताओं ने लेखिका नासिरा शर्मा को भी व्यथित और विवश किया होगा- 'कुइयाँजान' लिखने को। क्यों कि पानी को लेकर नासिरा शर्मा के भीतर उठता भूचाल, एक वैचारिक द्वन्द्व के रूप में पूरे उपन्यास पर छाया रहता है। जल समस्या के संदर्भ में उपन्यास में बार-बार इस बात का उभरना कि –''मनुष्य चाहे आधुनिक टाइक्नॉलॉजी में कितना ही आगे क्यों न निकल जाय या फिर प्राकृतिक जल संपदा के अक्षय स्रोतों के साथ मानवीय महत्वाकाक्षाओं की खिलवाड़ भले ही क्षणिक सुख समृद्धि के रूप में नज़र आती है किन्तु वह अपनी जिजीविषा के लिए भीषण और भयंकर परिणामों को भी आमंत्रित कर रहा है।'' [4]

उपन्यास में पात्रों की स्थितियां और उनके द्वारा सामना किए गए जल संकट की समस्याएं सामाजिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से बहुत गहरी हैं।

3. जल, पारंपरिक ज्ञान, और आधुनिकता

"कुइयाँजान" में पारंपरिक जलस्रोतों और जल के संरक्षण की पद्धतियों को भी प्रमुखता से लिया गया है। नासिरा शर्मा ने जल के पारंपरिक स्रोतों की महत्ता को दर्शाते हुए यह बताया है कि हमारे पूर्वजों ने जल को लेकर जो ज्ञान और समझ विकसित की थी, वह आज के विज्ञान से भी कहीं अधिक सशक्त था। उपन्यास के पात्र पानी की समस्या को लेकर विचार करते हुए -"पानी... पानी का संकट मुझे पूरी नौटंकी लगती है। हमारे पास जल की अपार संपदा है; मगर हम उसकी व्यवस्था ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे हैं।" एक ने पहला शिगूफा छोड़ा।-"नेशनल वाटर ब्रदरहुड-एन.डब्ल्यू. बी. ने बहुत बढ़िया काम किया है। सारे जमीन से जुड़े लोगों को इकट्ठा कर जल-संरक्षण और जल-संसाधनों की सुरक्षा और उसके प्रति जागरूकता बढ़ाने का काम

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

शुरू किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि समय रहते हम इस समस्या पर काबू पा लेंगे; वरना तो भगवान् ही मालिक है।" एक सज्जन बड़े जोश से बोल रहे थे, "पानी की बॉटलिंग का धंधा अंततः पानी से वंचित करने का साधन बनता जा रहा है। इसका एक उदाहरण केरल के पालक्कड जिले में प्लाचीमड़ा गांव का है, जहां कोकाकोला कंपनी ने पानी का 'बॉटलिंग संयत्र' लगाया था। इसके लिए कंपनी ने 300 से 600 फीट गहरे 30 बोरवेल खोदे और वह प्रतिदिन 15 लाख लीटर पानी जमीन से खींचने लगी। इसका नतीजा जानते हैं, क्या हुआ? सारे पोखर, कुएं, दो बड़े जलाशय और धान के खेत सूख चले हैं। इससे गांव के 300 आदिवासियों पर नया संकट आ घिरा है। अब बुनियादी सवाल यह है कि वहां के पानी पर गांव के लोगों का अधिकार है या फिर बहुराष्ट्रीय कंपनी का? नफा कहां गया और नुकसान किसके खाते में दर्ज हुआ?" आवाज के साथ इन साहब का सीना भी धौंकनी बना हुआ था।"यह बड़ी खतरनाक समस्या हमारे सामने आ खड़ी हुई है। इसके प्रति आम लोगों में जागृति बहुत जरूरी है। वरना यहां पानी भी दूध के भाव बिकेगा और एक समय ऐसा आएगा जब अपनी ही नदियों का पानी पीना, वह भी खरीदकर, बहुत बड़ी ऐयाशी समझा जाएगा।" इस बार उठी आवाज में चिंता की गहराई थी।'' [5]

समय के साथ यह पारंपरिक ज्ञान विस्मृत होता गया और आधुनिकता ने हमें ऐसे तकनीकी समाधान प्रदान किए जो जल की कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थे। उपन्यास में यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या हम अपनी जलधारा और जल के पारंपरिक उपायों को भूलकर आधुनिकता के पीछे भाग रहे हैं, या हमें इस ज्ञान को पुनः अपनाकर समाधान की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए ?

4. राजनीति और जल संकट

नासिरा शर्मा ने उपन्यास में जल संकट के राजनीतिक पहलू को भी उजागर किया है। नदियों का जोड़ने, जलवायु परिवर्तन, और जल वितरण के मुद्दे पर राजनीति कैसे खेली जाती है, यह उपन्यास में साफ नजर आता है। सरकारों के जल नीति और जल वितरण प्रणाली में बहुत सारी कमियां हैं, जो इस संकट को और बढ़ा देती हैं। जब जल संकट की बात होती है, तो यह केवल एक प्राकृतिक संकट नहीं होता, बल्कि यह एक राजनीतिक मुद्दा भी बन जाता है। जल के सही वितरण के बिना समाज में असमानता और संघर्ष की स्थिति पैदा हो सकती है।उपन्यास के पात्र पानी की योजनाओ पर बात करते हुए -"भई, मैं कहता हूं कि सड़क का जाल पूरे भारत में फैलाया जा सकता है तो इन बड़ी नदियों को आपस में क्यों नहीं जोड़ा जा सकता? सर आर्थर कॉटन, जो पेशे से इंजीनियर थे, उन्हीं की यह जोरदार योजना थी। दूसरे इंजीनियर भारत के ही हैं डॉ. के.एल. राव, जो यह मानते थे कि इससे कम जलवाले क्षेत्र भी सींचे जा सकते हैं। इस योजना पर छप्पन हजार करोड़ रुपये खर्च आने का अनुमान है या इससे भी थोड़ा ज्यादा, तो महाशय, हमारे गांव-बस्तियां फिर से लहलहा उठेंगी और सबको जल का समान वितरण मिलेगा। मैं तो कहता हूं, सरकार को कल की जगह आज ही काम शुरू करवा देना चाहिए।" [6]

अतः नासिरा शर्मा केवल सवाल ही नहीं उठाती बल्कि प्रश्नों के उत्तर खोजने को मजबूर करती है – ''जो तुम्हारी गोली से पैदा होने से पहले मरते जा रहे हैं। जाओ देखो उस जमीन को जिसके स्तनों को तुमने निचोड़ लिया और अपनी सत्ता के लिए उस पर परमाणु बमों का प्रयोग किया। जाओ देखो उसकी तपती परतों को और उसकी साजिश का अंदाजा लगाओ कि वह किस तकलीफ से दो-चार है। उन पर्वतों को देखो, जिन्हें तोड़कर, उड़ाकर तुमने अपनी इच्छाएँ पूरी की। उन हिम शिखरों को देखों जिन्होंने अपने वजूद को

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

पिघलाकर तुम्हें नदियाँ दी और तुमने उन्हें बर्बाद कर दिया। यहीं नदियां थीं जिनके किनारे तुम आकर बसे थे, आज तुम उनसे मुँह मोड़ चुके हो। तुम स्वार्थी हो।"[7]

डॉ. कमाल इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है, जो जनता की सेवा करने के लिए समर्पित है। जल संपत्ति पर डॉ. कमाल का गहन अध्ययन है। दूषित पानी के कारण होने वाले रोगों के प्रति वे जनता को सचेत करते हैं। कई सेमिनारों में जल समस्या से संबंधित अपने आलेख प्रस्तुत करते हैं। इन्हीं आलेखों से यह जानकारी मिलती है – ''ध्यान रहे कि पानी एक 'मानवीय आवश्यकता' है, न कि 'मानवीय अधिकार' भर है। इसी कथन को जब हम आगे देखते हैं तो यह षड्यंत्र समझ में आता है कि विश्व बैंक और मुद्रा कोष के समर्थन से कई बहुराष्ट्रीय निगमों ने कई देशों में जल की आपूर्ति एवं उसके हल का काम अपने जिम्मे ले लिया है। इस तरह मनमाने ढंग से उन्होंने पानी की कीमत बढ़ा दी है। इन 'स्वच्छ जल' देने के ढकोसलों का लक्ष्य वास्तव में मध्य वर्ग एवं उच्च वर्ग की मानसिकता से खेलकर धन उगाही है।

इसलिए बहुराष्ट्रीय निगम जल आपूर्ति से मिलने वाले मुनाफे से प्रसन्न होकर बड़े पैमाने पर पाइप लाइन बना रहे हैं, जिसके द्वारा गरीब देशों का पानी अमीर देशों तक पहुंचाया जाएगा। विश्व बैंक तेल की तरह ही इसकी आयात-व्यवस्था पर जोर दे रहा है। यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि छत्तीसगढ़ में भिलाई के पास शिवनाथ नदी की 22 कि.मी. की पट्टी को एक निजी कंपनी के हाथ में देकर वहां के लोगों के लिए नदी में प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। इस तरह से हम देखते हैं कि नदियों के अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। वह दिन बहुत दूर नहीं है जब हमें अपनी ही नदियां पराई लगने लगेंगी।'लेख खत्म कर मास्टरजी सन्नाटा खींच गए।'' [8]

अतः यह उपन्यास पानी का हमारे जीवन में महत्व, उसकी कमी एवं उसके प्रदूषित होने के कारण होने वाली हानियों से हमें सचेत करता है। पानी का विषम रूप सहज ही पाठक के अपने जीवन से जुड़ी गंभीर समस्या महसूस होने लगती है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर,"कुइयाँजान"नासिरा शर्मा का एक उत्कृष्ट उपन्यास है, जो जल संकट, उसके सामाजिक प्रभावों और पारंपरिक जलस्रोतों के महत्व पर विचार करने के लिए पाठकों को प्रेरित करता है। यह उपन्यास जल की कमी और उसकी राजनीति से जुड़े विभिन्न पहलुओं को एक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जो न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी एक चेतावनी है। इस उपन्यास का संदेश साफ है—पानी हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, और इसके संकट से निपटने के लिए हमें पारंपरिक ज्ञान को समझने और उसे पुनः अपनाने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. नासीरा शर्मा के उपन्यासों का अध्ययन –Review of Research Journal पृ. -13
2. नासिरा शर्मा, कुइयाँजान पृ. 88
3. संपादक: एम. फीरोज़ अहमद, नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण- 2010, पृ. 108
4. वाडमय-हिंदी पत्रिका 05 नवंबर 2010 संपादक डॉ एम.फिरोज अहमद
5. नासिरा शर्मा, कुइयाँजान पृ.102

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

6. नासिरा शर्मा, कुइयाँजान पृ. 80
7. नासिरा शर्मा, कुइयाँजान पृ. 84
8. नासिरा शर्मा, कुइयाँजान पृ. 89

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved